2018-2019

3.3.3(5)

UGC Approved No. 41232 ISSN : 2347–4041
Impact Factor 2.003
संस्कार चेतना अन्तरराष्ट्रीय मूल्यांकित शोध पत्रिका
वर्ष 8, अंक 3, नवम्बर 2018

उपनिषदों में पर्यावरण

डॉ० विदुषा
राजकीय महिला महाविद्यालय
करनाल (हरियाणा)

'परितः आवरणम्' इति पर्यावरणम् प्राकृतिक (भौतिक रासायनिक, जैविक) परतों की निर्मिति से मानव निवास आवृत्त है वही पर्यावरण है । पञ्चभौतिक तत्त्वों से निर्मित मानवशरीर के भौतिक एवं आध्यात्मिक सर्वविध स्वास्थ्य के लिए इन पञ्चतत्त्वों का संतुलन सर्वथा अपेक्षित है । समस्त वाङ्मय का चरम उद्देश्य मानव जीवन को अभ्युन्नत, समृद्ध एवं परिपूर्ण बनाना है । वैदिक वाङ्मय के आध्यात्मिक पक्ष को समुज्ज्वल रूप से सुस्थापित करने वाले उपनिषदों में पर्यावरण संरक्षण का दिग्दर्शन इस पत्र में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

ब्रह्माण्ड (विश्व) के संचालनार्थ विश्वस्रष्टा ने वेद रूप संविधान को प्रकट किया तद्यथा - **"यस्य निःश्वसितं वेदाः"**। वेदवार्ता सहज ही प्रकृति को साथ लेकर चलती है । पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, वाक् इत्यादि तत्त्व वेद में पुरुष अथवा परमात्मा की विविध शक्तियों के रूप में वर्णित हैं । ज्ञान कर्म एवं उपासना तीन काण्डों में विभक्त वेद अपने समस्त कर्मों के माध्यम से मानव को परमात्मा के प्रति समग्र समर्पण के मार्ग पर प्रेरित करता है ।

वेद के उपासनाकाण्ड की मनोरम अभिव्यक्ति करने वाले उपनिषदों में सर्वप्रथम मान्य ईशोपनिषद् का प्रथम मन्त्र है -

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन व्यक्तेन भुञ्जीथामा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥[1]

तात्कालिक समय में विद्यमान समस्त विसंगतियों के मूल में यही लोभ ही है जो मनुष्य को प्रकृति का उपयोग करने के बदले उपभोग की ओर उन्मुख कर भूमण्डलीय जीवन के भविष्य को पतनाभिमुख कर देता है । एक अध्ययन के अनुसार विगत 10000 वर्षों में भी मनुष्य ने प्रकृति का उतना उपयोग नहीं किया जितना कि विगत 200 वर्षों में वह प्रकृति का उपभोग कर चुका है । भारतीय परम्परा में मनुष्य को देव-पितृ-एवं आचार्य ऋण के अतिरिक्त प्रकृति ऋण एवं ऋषि ऋण भी चुकाना है । प्रकृति ऋण का सम्बन्ध पर्यावरण संरक्षण में अपने सक्रिय योगदान से है । आर्ष साहित्य का अध्ययन अध्येता की अन्तर्निर्मिति को सहज ही प्रकृतिमित्र बना देता है ।

तात्कालिक युग में प्रयुक्त विभिन्न वैज्ञानिक आविष्कारों हेतु सामग्रियाँ विविध आर्षग्रन्थों से ही गृहीत हैं । उस समय भी विमान यन्त्रनौका, विविध शस्त्रास्त्र इत्यादि अनेकानेक यान्त्रिक रीतियों का प्रयोग होता था तथापि ऋषियों ने समस्त प्रकार के विज्ञान से परिचित होते हुए भी उसे आज के समान सर्वसुलभ सम्भवतः इसीलिए नहीं बनाया कि ऐसा करने के दुष्परिणामों का उन्हें अनुमान था। पुरातन साहित्य में प्रकृति एवं पशु अथवा भूमण्डल पर एवं अन्तरिक्ष में विद्यमान समस्त चर एवं अचर प्राणियों अथवा आकाशीय पिण्डों का मानव जीवन के अङ्ग के रूप में सहज चित्रण उपलब्ध होता है । रामायण-महाभारत से लेकर अभिज्ञानशाकुन्तलम् अथवा एतत्परवर्ती साहित्य में प्रकृति एवं पशु परिवार के सदस्य के समान ही सहज सम्मान पाते हैं । जगदीशचन्द्र बसु ने उपनिषदों के स्वाध्याय के आधार पर ही पौधों को सजीव प्रमाणित किया था।